जो चीज हो रही है उसे हम कर नहीं सकते

पेड़ बड़ा हो रहा है यह घटना अपने आप होती है, उसमे हमें कुछ करना नहीं है, खेत में निम् का पेड़ बड़ा हुवा है अपने आप हुआ हमारी जानकारी के बहार, चाँद का निकलना अपने आप है, हमें पता हो या न हो, हमारी जानकारी की उसे परवा नहीं, पक्षीओ की कलरव अपने आप है, उसे हम आर्डर नहीं देते, सुबह में कूकडू कू की आवाज अपने आप होती है, वह सारी घटनाए इंसानो के पहले की है जब इंसान नहीं था तब भी था, इवन पृथ्वी नहीं थी तब कुछ था, दूसरे तारे, दूसरे ग्रह, दूसरी गेलेक्सिया, पर यह सब चीज होती है. "सब चीज होती है", हमारी लाइफ में जो शब्द यूज़ करते है की 'होता है' जो बहार से सीखा हुआ है, वह शब्द अलग है, हम कहते है त्यौहार मनाना होता है, जैसे दीवाली आती है तब फटाके फोड़ने होते है, मिठाईया बटती है, पर हमें पता नहीं क्यों. बस हम मानते है 'ऐसा करना होता है', पहले भी लोग करते थे, हमें सिर्फ बताया गया है की राम वनमे से लोटे थे की वह पुराना वक्त गिन लिया था, राम के विरह में जो दुःख था वह पुराना हो गया, अब राम वापस आ गए तो नयी शुरुआत हुयी, चाँद नया हो गया, सूरज की रौनक कुछ अलग ही है, सूरज के उगने में अब नयी थनगनाहट है, पक्षी की कलरव और मधुर हो गयी है, अब एक दूसरे की आँखों में प्रेम नजर आता है, मिठाईया बटती है, पर आज बस हमारे पास इनफार्मेशन है, की ऐसा हुआ था इसलिए ऐसा करना होता है, हम भावनात्मक रूप से नहीं जुड़े है, हमारे ख़ुशी दूसरे कारन से होगी, रोज दौड़ धाम करते है तो छुट्टी मिलेगी, ऑफिस नहीं जाना है, मिठाईया खानी है, क्योकि मिठाई का स्वाद अच्छा लगता है, बस ऐसे ही जो त्यौहार है वह हम करते आ रहे है, बस समय के साथ तरीके में चेंज होता रहता है, पर वह पुरानापन वही का वही है, एक अर्टिफिशलनेस, " ऐसा करना होता है ", अगर हमारा राम के प्रति प्यार है, उसे हमारा लगाव है, तो आज भी हमारा राम वापस आ सकता है, हमारा भावनात्मक रूप से जुड़ना अपने आप हो सकता है, अगर हम अपने दुःख में से बहार निकल जाये, जैसे राम के वन में जाने से लोगो को दुःख हुवा था, और वापस आने से जीवन में जो थनगनहट खिली थी वह आज भी हो सकता है, हमारे जीवन में भी बहार आ सकती है, अगर सब अपने दुखो में से बहार निकल जाये तो सुबह नयी हो सकती है, वह चाँद नया लग सकता है, पेड़ का अपने आप अपने आप बड़ा होना नजर आ सकता है, नहीं तो हम कहेंगे यहाँ पर किसने बीज डाला होगा, पर यह सब कहना हमारे दुखो के कारन है, राम ने हमें जो जीवन दिया है, जो सुंदरता दी है, वह नजर नहीं आती, अगर हम अपने दुःख में से बहार निकल जाये तो हमारा राम यही पर है, उत्सव आज भी है, जीवन का हर दिन उत्सव है, तब हम भावनात्मक रूप से जीवन से जुड़े होंगे, तब हमारा उत्सव मनाना राम के साथ वापस जुड़ने से होगा, कोई फरक नहीं पड़ता त्यौहार आप क्यों मनाते है, यह पता हो या ना हो, तब आप कहोगे उत्सव मुझे मनाने दो, में नहीं जानता क्या करना होता है, बस मुझे उत्सव मनाना है....

Aasthit